ISSN (O): 2320-5407
ISSN (P): 3107-4928

Journal Homepage: -www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

Article DOI:10.21474/IJAR01/23074
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/23074

CONFERENCE PAPER

भारतीय शास्त्रीय संगीत में उस्ताद राशिद खान का योगदान: सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि में

सृष्टि अवस्थी and प्रोफेसर डॉ सृष्टि माथुर

1. गायन विभाग : भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय, लखनऊ

Manuscript Info

Manuscript History
Received: 04 January 2026
Final Accepted: 08 February 2026
Published: March 2026

Key words:-
उस्ताद राशिद खान, भारतीय शास्त्रीय संगीत, सांस्कृतिक योगदान, आर्थिक प्रभाव, संगीत और समृद्धि

Abstract

भारतीय शास्त्रीय संगीत भारतीय सभ्यता की दीर्घकालिक सांस्कृतिक परंपरा का सजीव प्रतीक है। यह केवल एक कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सामाजिक मूल्यों, आध्यात्मिक अनुभवों और आर्थिक संरचनाओं से जुड़ा हुआ एक व्यापक सांस्कृतिक तंत्र है। प्रस्तुत शोध–पत्र में उस्ताद राशिद खान के उदाहरण के माध्यम से यह विश्लेषण किया गया है कि किस प्रकार एक समकालीन शास्त्रीय कलाकार अपनी साधना, मंचीय प्रस्तुतियों, शिक्षण गतिविधियों और अंतरराष्ट्रीय उपस्थिति के माध्यम से संगीत की सांस्कृतिक निरंतरता और आर्थिक सशक्तिकरण दोनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।यह अध्ययन गुणात्मक पद्धति तथा केस–स्टडी दृष्टिकोण पर आधारित है। द्वितीयक स्रोतों, समीक्षाओं, शोध–लेखों और सांस्कृतिक विश्लेषणों के आधार पर यह प्रतिपादित किया गया है कि उस्ताद राशिद खान का योगदान भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा के संरक्षण, नवाचार और आर्थिक सुदृढ़ीकरण में बहुआयामी और ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है।

"© 2026 by the Author(s). Published by IJAR under CC BY 4.0. Unrestricted use allowed with credit to the author."

Introduction:-

भारतीय शास्त्रीय संगीत का विकास वैदिक कालीन सामगान से लेकर मध्यकालीन दरबारी परंपराओं और आधुनिक संगीत मंचों तक निरंतर होता रहा है। यह परंपरा गुरु–शिष्य संबंध, घराना व्यवस्था और राग–तंत्र की संरचना पर आधारित है।समकालीन परिप्रेक्ष्य में, जब वैश्वीकरण और तकनीकी माध्यमों ने सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के स्वरूप को परिवर्तित किया है, तब शास्त्रीय संगीत की

Corresponding Author:- सृष्टि अवस्थी
Address:- गायन विभाग : भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय, लखनऊ

प्रासंगिकता को बनाए रखना एक चुनौती भी है औरअवसरभी रामपुर–सहसवान घराने के प्रतिनिधि के रूप में उस्ताद राशिद खान ने अपने गुरु उस्ताद निसार हुसैन खान से कठोर तालीम प्राप्त की।

उनकी गायकी की विशेषताएँ थीं:-
- विलंबित खयाल में गंभीर आलाप।
- तानो की स्पष्टता और गति।
- स्वर–शुद्धि और गंभीर भाव।
- राग की संरचनात्मक शुद्धता।

उन्होंने पारंपरिक रागों के साथ-साथ ठुमरी और भजन शैली में भी उल्लेखनीय प्रस्तुतियाँ दीं।
उनकी कला परंपरा और आधुनिकता के बीच एक सशक्त सेतु के रूप में उभरती है।

उद्देश्य:-
उस्ताद राशिद खान के सांस्कृतिक योगदान का विश्लेषण करना।
उनके माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत के आर्थिक प्रभाव का अध्ययन करना।
गुरु–शिष्य परंपरा और समकालीन मंचीय संरचना के अंतर्संबंध को समझना।

अध्ययनकीसीमा:-
प्रस्तुत अध्ययन की कुछ स्वाभाविक सीमाएँ हैं, जिन्हें ध्यान में रखते हुए इसके निष्कर्षों को समझा जाना चाहिए—
यह शोध मुख्यतः गुणात्मक पद्धति और द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है| अतः इसमें प्रत्यक्ष साक्षात्कार या क्षेत्रीय सर्वेक्षण सम्मिलित नहीं किए गए हैं।
- आर्थिक प्रभाव का विश्लेषण व्यापक सांख्यिकीय आँकड़ों के बजाय उपलब्ध सार्वजनिक सूचनाओं और वैचारिक व्याख्या पर आधारित है।
- अध्ययनकाकेंद्रएकविशिष्टकलाकारपरहै, इसलिए इसके निष्कर्ष समस्त घरानों या सभी शास्त्रीय कलाकारों पर समान रूप से लागू नहीं माने जा सकते।
- सांस्कृतिकयोगदानकामूल्यांकनआंशिकरूपसेसमीक्षात्मकऔरव्याख्यात्मकदृष्टिकोणपरआधारितहै, जिसमें विभिन्न विद्वानों के मतों के बीच स्वाभाविक भिन्नता संभव है।

कार्यप्रणाली:-
- यहअध्ययनगुणात्मकदृष्टिकोण पर आधारित है।
- द्वितीयकस्रोतोंजैसेशोध–लेख, समीक्षाएँ, संगीत–आलोचनाएँ, प्रकाशित साक्षात्कार और सांस्कृतिक अध्ययन ग्रंथों का विश्लेषण किया गया।
- केस–स्टडीपद्धतिकेमाध्यमसेउस्तादराशिदखानकीप्रस्तुतियों, शिक्षण गतिविधियों और सांस्कृतिक भूमिका का विश्लेषण किया गया।
- व्याख्यात्मकपद्धतिकाउपयोगकरसांस्कृतिकऔरआर्थिकप्रभावोंकाआकलनकियागया।

निष्कर्ष:-
सांस्कृतिक और आर्थिक दोनों आयामों के समन्वित अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उस्ताद राशिद खान का योगदान बहुस्तरीय है।

सांस्कृतिकपक्ष:-
उस्ताद राशिद खान जी ने रामपुर–सहसवान घराने की विशिष्ट शैली को स्थायी रखते हुए उसे आधुनिक श्रोताओं के लिए सुलभ बनाया। उनकी प्रस्तुतियों में परंपरा और नवाचार का संतुलन दिखाई देता है।गुरु–शिष्य परंपरा के पुनर्स्थापन में उनका योगदान महत्वपूर्ण है। इन्होंने शिक्षण और प्रशिक्षण के माध्यम से युवा पीढ़ी को शास्त्रीय संगीत से जोड़ा। यह सांस्कृतिक ज्ञान–हस्तांतरण की प्रक्रिया का प्रमुख माध्यम है।उनकी अंतर्राष्ट्रीय प्रस्तुतियों ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठित किया। इससे भारत की सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ता मिली।इन्होनें शास्त्रीय ढांचे को बनाए रखते हुए भावप्रधान प्रस्तुति के माध्यम से सामान्य श्रोताओं को भी आकर्षित किया, जिससे शास्त्रीय संगीत का सामाजिक आधार विस्तृत हुआ।

आर्थिकपक्ष:-

शास्त्रीय संगीत केवल साधना नहीं, बल्कि पेशेवर जीवन का आधार भी है। उस्ताद राशिद खान के संगीत कार्यक्रम, राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय प्रस्तुतियां और रिकॉर्डिंग कार्य संगीत को आर्थिक संरचना से जोड़ते हैं।एल्बम, लाइव कॉन्सर्ट, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म और संगीत समारोहों के माध्यम से शास्त्रीय संगीत सांस्कृतिक उद्योग का हिस्सा बना। इससे कलाकारों, आयोजकों, ध्वनि–तकनीशियनों और अन्य सहयोगी वर्गों को रोजगार मिला।विदेशी मंचों पर प्रस्तुतियों ने सांस्कृतिक कूटनीति और सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया। इससे भारतीय संगीत की वैश्विक मांग और प्रतिष्ठा दोनों बढ़ी|संगीत शिक्षण और कार्यशालाओं के माध्यम से एक संस्थागत आर्थिक ढांचा विकसित हुआ, जो दीर्घकालीन स्थिरता प्रदान करता है।

निष्कर्षात्मकटिप्पणी:-

इस शोध–पत्र के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि उस्ताद राशिद खान का योगदान भारतीय शास्त्रीय संगीत के सांस्कृतिक संरक्षण और आर्थिक सशक्तिकरण दोनों में अत्यंत महत्वपूर्ण है।उन्होंने परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करते हुए संगीत को जीवंत, प्रासंगिक और सशक्त बनाया। उनका उदाहरण यह दर्शाता है कि शास्त्रीय संगीत केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की सांस्कृतिक एवं आर्थिक शक्ति भी है।

सन्दर्भसूची:-

1. चौबे, सुशीलकुमार. संगीतकेघरानोंकीचर्चा. उत्तरप्रदेशहिंदीसंस्थान, 2014, पृ. 188.
2. “Ustad Rashid Khan Who Leaves behind a Legacy in Hindustani Classical Music.” Hindustan Times, 9 Jan. 2024, www.hindustantimes.com/entertainment/ustad-rashid-khan-who-leaves-behind-a-legacy-in-hindustani-classical-music-101704801501471.html.
3. रागसंगीत. “राशिदख़ानइंटरव्यूऔरप्रस्तुतियाँ.” रागसंगीत, www.raagsangeet.com.
4. राशिदख़ान, उस्ताद. “शख्सियतविथउस्तादराशिदख़ान.” YouTube, रागसंगीत, 9अक्टूबर2021,www.youtube.com/watch?v=OjP6MmP4lyc
5. Towse, Ruth. A Textbook of Cultural Economics. Cambridge University Press, 2010.
6. Mino, Kazuo, and Takashi Yagi, editors. The Cultural Basis of Economic Growth in India. Springer, 2022